RJPP, Vol. 14, No. 2, 2016
ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
4.0000

RJPP
REVIEW JOURNAL OF POLITICAL PHILOSOPHY
A Peer Reviewed International Journal

वर्तमान परिदृश्य में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रों पर महामना के आदर्शों के प्रभाव का विवेचन

डा0 दीपा पाठक*
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
एन0के0बी0एम0जी0 (पी0जी0) कॉलेज
चन्दौसी (सम्भल)
drdeepa2211@gmail.com

प्रस्तावना–

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय महामना मदन मोहन मालवीय जी की प्रगतिशील विचारधारा द्योतक है। धर्म, दर्शन, कला, उद्योग एवं तकनीक के रूप में महामना की साकार अध्ययन–अध्यापन की कल्पना परिलक्षित होती है। छात्रावास, कर्मचारी आवास तथा शिक्षक आवास के साथ ही महिला संकाय, संस्कृति, कला, विज्ञान तथा तकनीकी संस्थान के अनुरूप निर्माण योजना बनाई। विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या के साथ ही हिन्दू विश्वविद्यालय का विस्तार होता जाये, यह सोचकर ही ऐसी योजना महामना ने बनाई जो उनकी मृत्यु के बाद आज भी योजना रूप क्रियान्वित है एवं निर्माण आज भी उसकी योजना के अनुरूप हो रहा है। महामना प्रचीन भारतीय गौरव–गरिमा को भौतिकवाद से जोड़कर भारतीय संस्कृति का सुविकसित एवं सुदृढ़ भवन र्निमित करना चाहते थे ताकि भारत को अपना प्राचीन गौरव पुनः प्राप्त हो सकें। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होनें भव्य एवं सुन्दरतम् योजनाओं का निरूपण किया जो उनके जीवनकाल से लेकर आज तक गतिशील है और भविष्य में भी निरन्तर गतिवान रहेगी।

आवश्यकता एवं महत्व–

आज संपूर्ण विश्व राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा शैक्षिक समस्याओं से ग्रसित है। कहीं धर्म के आधार पर युद्धों की घोषणा हो रही है तो कहीं साम्प्रदायिक एवं क्षेत्रीयतावाद अपना ताण्डव प्रस्तुत कर रहे हैं। भारत भी इनसे अछूता नहीं है। फलस्वरूप देश में धर्म, भाषा, सीमा, तथा पंगु शिक्षा व्यवस्था आदि अनेक आधारों को लेकर विवाद उठ रहे हैं। महामना की शिक्षा का लक्ष्य चारित्रिक उन्नयन, धार्मिक उन्नयन, आर्थिक समृद्धता, व्यवसायिक कुशलता, राजनैतिक स्थिरता, सामाजिक, दार्शनिक एवम् नैतिक मूल्यों की उन्नति से सम्बन्धित था। इन्हीं आदर्शों को मूर्तरूप देने हेतु उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का सृजन किया। परन्तु आज की परिस्थितियों में एक लम्बा अन्तराल आ चुका है। जिस विश्वविद्यालय को मूर्त रूप में साकार करने हेतु महामना ने अथक परिश्रम किया आज उस विश्वविद्यालय में उन सिद्धान्तों का

ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
4.0000

क्या महत्व है तथा वहाँ अध्ययनरत छात्र उन सिद्धान्तों को कितना जरूरी समझते हैं इसका अध्ययन करना आज के परिप्रेक्ष्य में अति आवश्यक हो जाता है।

उद्देश्य–

राष्ट्रीय उत्थान एवं जनकल्याण के प्रवर्तक एवं समर्थक महामना की शैक्षिक विचारधारा व उनके द्वारा स्थापित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का आधुनिक परिवेश में आलोचनात्मक एवं सुव्यवस्थित अध्ययन करना तथा शिक्षा जगत के माध्यम से लोक कल्याण की भावना को जाग्रत करना ही इस अध्ययन का पुनीत उद्देश्य है।

प्रयुक्त कार्य प्रणाली–

वर्तमान परिदृश्य में भी महामना के विचारों का बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एवम् उसके वर्तमान छात्रों पर कितना प्रभाव है इसका लघुरूप में सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन किया गया। इस सर्वेक्षण हेतु विश्वविद्यालय के हर संकाय एवम् हर वर्ष में अध्ययनरत् छात्रों में से कुल 200 छात्र–छात्राओं को यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा सम्मिलित रूप से चुना गया ताकि वे संपूर्ण विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व कर सकें। प्रस्तुत अध्ययन में प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली के दस प्रश्न महामना के निम्न दस आदर्शों पर आधारित थें :–

1. देश प्रेम एवं राष्ट्रीयता की शिक्षा
2. शिक्षा में प्राचीन भारतीय संस्कृति और आधुनिक ज्ञान विज्ञान का समन्वय
3. शिक्षा में मातृभाषा का प्रयोग
4. पुस्तकीय ज्ञान व व्यवहारिक ज्ञान
5. शिक्षा में सृजनात्मकता
6. शारीरिक शिक्षा की उपादेयता
7. धार्मिक शिक्षा
8. रोजगार परक शिक्षा
9. स्त्री शिक्षा
10. शिक्षा द्वारा समाजोत्थान

प्रदत्तों का सारणीयन–

न्यादर्श द्वारा स्वतः भरवायी गयी प्रश्नावलियों के आधार पर सारणी बनायी गयी। सारणी में वर्गों के आधार पर प्रदत्तों को संकलित किया गया। प्रश्नावली में छात्र–छात्राओं द्वारा दिये गये मौलिक लिखित उत्तरों का विषय–वस्तु विश्लेषण करते हुए तीन वर्ग निश्चित किए गए – 1. सकारात्मक 2. नकारात्मक 3. तटस्थ

संकलित प्रदत्तों को एक सारणी में प्रश्नों के अनुरूप व्यवस्थित किया गया। तत्पश्चात् प्रत्येक आंकड़े को प्रतिशत में दर्शाने हेतु गणना की। इन वर्गों के आधार पर, प्रश्नों के प्राप्त उत्तरों का प्रभाव

ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
4.0000

प्रतिशत विधि द्वारा ज्ञात करके बार ग्राफ में दर्शाकर विश्लेषण एवं व्यख्या की गई ताकि निष्कर्ष ज्ञात करने में सुविधा रहे।

सारणी

प्रश्न संख्या	उत्तर वर्ग					
	सकारात्मक		नकारात्मक		तटस्थ	
	कुल	प्रतिशत में	कुल	प्रतिशत में	कुल	प्रतिशत में
1.	96	48%	104	52%	0	0%
2.	136	68%	64	32%	0	0%
3.	104	52%	96	48%	0	0%
4.	120	60%	80	40%	0	0%
5.	120	60%	64	32%	16	8%
6.	128	64%	56	28%	16	8%
7.	144	72%	56	28%	0	0%
8.	160	80%	40	20%	0	0%
9.	96	48%	80	40%	24	12%
10.	104	52%	80	40%	16	8%
(कुल उत्तर) 2000 में से	**1208**	**60.4%**	**720**	**36%**	**72**	**3.6%**

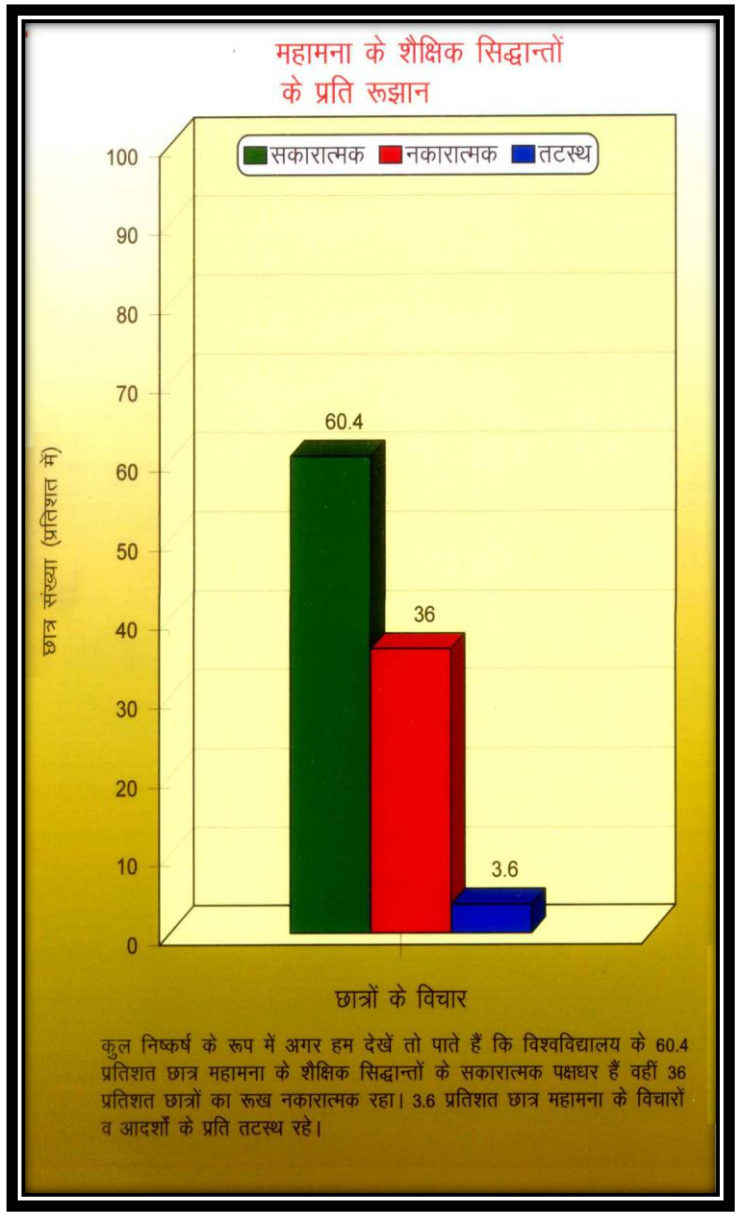

महामना के दसों शैक्षिक सिद्धान्तों के प्रति छात्रों के रूझान देखने हेतु प्राप्त 2000 विचारों में से कुल 1208 विचार पूर्ण रूप से सकारात्मक रहे। 720 मत महामना के शैक्षिक सित्रद्धानतो के विपरीत रहे तो वहीं 72 मतों का रूख पूर्णतया तटस्थ रहा।

अतः इस लधु सर्वेक्षण के निष्कर्ष स्वरूप देखा गया कि महामना ने अपने जिन शैक्षिक सिद्धान्तों व आदर्शों को लेकर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का सृजन किया, आज तुलनात्मक रूप में उन सिद्धान्तों की स्थिति शोचनीय है। भले ही यह बदलते परिवेश व पाश्चात्य संस्कृति के कुप्रभाव के फलस्वरूप हो परन्तु फिर भी कम से कम 75 प्रतिशत छात्रों का रूझान तो महामना के शैक्षिक सिद्धान्तों के पक्ष में होना चाहिए

ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
4.0000

था। शिक्षकों व छात्रों के मध्य दूरी बढ़ती जा रही है। समाजोत्थान के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जरूर कुछ प्रयास हो रहे हैं जैसे **''उत्कर्ष''** नामक संस्था समाज में व्याप्त बुराईयों को जड़ से मिटाने को प्रयासरत् है तथा आर्थिक सुदृढ़ता व एन0एस0एस0 आदि भी इस लक्ष्य प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

आज इतने वर्षो बाद भी शिक्षा पर पाश्चात्य कुप्रभाव के बावजूद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के लगभग 61 प्रतिशत छात्र महामना के शैक्षिक सिद्धान्तों के सकारात्मक पक्षधर है, हालांकि विश्वविद्यालय में उन सिद्धान्तों के प्रति उतनी अडिगता दृष्टिगोचर नहीं हुई जितनी कि महामना ने स्वप्न साकार करतें हुए सोचा होगा परन्तु फिर भी आज के बदलते परिवेश को देखते हुए सिद्धान्तों के प्रति इतना झुकाव भी महत्वपुर्ण समझा जाना चाहिए क्योकिं इस प्रतियोगिता के दौर में विश्वविद्यालय को अपनी गरिमा एवं साख बनाये रखने हेतु भी कुछ सिद्धान्तों पर आज के परिवेश के अनुसार स्वयं को ढालने की आवश्यकता महसूस होती होगी। इसके लिये यह अत्यन्त जरूरी है कि महामना ने जीवन के अनुभवों पर आधारित अपने जो सैद्धान्तिक व शैक्षिक विचारों की रूपरेखा खुद विश्वविद्यालय प्रशासन के लिये तय की थी उनका आज के युग की मांग के अनुरूप विश्वविद्यालय प्रशासन पालन करने का प्रयास व व्यवस्था करने की कोशिश करें ताकि छात्रों में महामना के सिद्धान्तों के प्रति आस्था व विश्वास जाग्रत हो। तभी सच्चे अर्थों में महामना का स्पप्न साकार हो सकेगा और सबसे महत्वपूर्ण यह है महामना द्वारा प्रतिपादित लक्ष्य के प्रति विश्वविद्यालय की आस्था हमेशा अक्षुण्ण रहे।

सन्दर्भ सूची–

1. *द्विवेदी कृष्णदत्त, भारतीय पुनर्जागरण और मदनमोहन मालवीय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1981*
2. *लाल मुकुट बिहारी, महामना मदनमोहन मालवीय– जीवन और नेतृत्व, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1978*
3. *मित्र विशुद्धानन्द, स्मारिका, राजधानी प्रिन्टर्स, 1980*
4. *चतुर्वेदी सीताराम, आधुनिक भारत के निर्माता, प0 मदनमोदन मालवीय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1970*

ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
4.0000